पाठ 9 **नवम्बर 24-30**

अति विश्वसनीय प्रमाण

सब्त अपराह्न **नवम्बर 24**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : यूहन्ना 11: 51-52; इफि० 2: 13-16; 2 कुरि० 5: 17-21; इफि० 4: 25, 5: 2; रोम० 14: 1-6; प्रेरि० 1: 14 .

याद वचनः *"यह बात उसने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा। और न केवल उस जाति के लिये, वरन इसलिये भी, कि परमेश्वर की तितर-बितर संतानों को एक कर दे" (यूहन्ना 11: 51-52)।*

बीते सप्ताह हमने अध्ययन किया, किस प्रकार एकता एक सामान्य संदेश के द्वारा उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु पर केन्द्रित होकर और अंतिम समय में पवित्र शास्त्र की सच्चाई पर जोर देते हए दिखाई देती है। उस संदेश के द्वारा हम जो हैं सो हैं जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है और वह पुकार जिसे पूरे संसार में फैलाना है।

इस सप्ताह हम कलीसिया के काम और मसीहियों के दिन-प्रतिदिन में इसकी अभिव्यक्ति में कलीसिया की दिखाई देने वाली एकता पर प्रकाश डालेंगे। यीशु के अनुसार, कलीसिया ऐसे ही उद्धार और मेल-मिलाप के परमेश्वर के संदेश का प्रचार नहीं करती है। स्वयं कलीसिया की एकता उस मेल-मिलाप की एक आवश्यक अभिव्यक्ति है। पाप और विद्रोह से भरे संसार में, कलीसिया मसीह के बचाव कार्य और सामर्थ्य की प्रत्यक्ष गवाह के तौर पर खड़ी है। कलीसिया में इसकी सामान्य गवाही की एकता और समन्वय के बिना, क्रूस की बचाव (मुक्ति) शक्ति इस संसार में मुश्किल से प्रकट होगी। "मसीह के साथ एकता एक दूसरे के साथ एकता के एक बंधन को स्थापित करता है। यह एकता मसीह की महिमा और भलाई के संसार का, और पाप को ले जाने की उसकी शक्ति का अति विश्वासनीय प्रमाण है।" Ellen G . White Comments, The SDA Bible Commentary, Vol. 5, P. 1148.

रविवार **नवम्बर 25**

यीशु के क्रूस के नीचे

परमेश्वर अपने लोगों को बहुत-सी अन्य आत्मिक आशीषें देता है, कलीसिया की एकता भी परमेश्वर का एक दान है। एकता हमारे प्रयास, अच्छे कर्म, और इरादों द्वारा मनुष्य की सृष्टि नहीं है। मूल रूप से, यीशु मसीह उस एकता का सृजन अपनी-मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा करता है। जैसा हम बपतिस्मा और हमारे पापों की क्षमा के द्वारा विश्वास से उसकी मृत्यु और

---

* सब्त, दिसम्बर 1 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

पुनरुत्थान को उचित ठहराते हैं, जैसा हम सामान्यतय: सहभागिता में शामिल होते हैं, और संसार में तीन दूतों के संवाद को फैलाते हैं हम उसके साथ और एक दूसरे के साथ एकता में हैं।

पढ़ें यूहन्ना 11:51-52 एवं इफि० 1:7-10. यीशु की कौन-सी घटना सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हमारे बीच में एकता की नींव है?

_____

_____

"यह बात उसने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा। और न केवल उस जाति के लिये, वरन् इसलिये भी कि परमेश्वर की तितर-बितर संतानों को एक कर दे" (यूहन्ना 11:51-52)। कितना अद्भुत कि परमेश्वर ने कैफा को यीशु की मृत्यु का वर्णन करने को नियुक्त किया, जब कि कैफा नहीं जानता था कि यीशु को मरने के लिये निंदा करने के द्वारा वह क्या कर रहा था। याजक को भी पता न था कि उसके कथन में कितनी गहराई थी। कैफा ने सोचा कि उसका कथन केवल राजनीतिक था। यूहन्ना ने हालाँकि परमेश्वर के समस्त विश्वस्त लोगों के लिये यीशु की एक्ज़ी (किसी दूसरे के बदले) मृत्यु के विषय मूलभूत सच्चाई को प्रकट करने के लिये इसका इस्तेमाल किया, जो एक दिन एक साथ जमा होंगे।

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हम जो भी विश्वास करते हैं जो भी संवाद प्रचार करते हैं हमारी एकता की नींव हमारे खातिर मसीह की मृत्यु को हमारे सामान्यतय: ग्रहण करने में मौजूद है।

इससे बढ़कर, हम मसीह में बपतिस्मा के द्वारा भी इस एकता का अनुभव करते हैं। "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गला० 3:26-27)। बपतिस्मा दूसरा बंधन है जिसे हम ऐडवेंटिस्ट अकसर साझा करते हैं, क्योंकि यह मसीह में हमारे विश्वास का प्रतीक होता है। हमारा एक ही पिता है, इस प्रकार हम सब परमेश्वर के पुत्र-पुत्रियाँ हैं। हमारा एक ही उद्धारकर्त्ता है जिसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में हमारा बपतिस्मा हुआ है (रोम० 6:3-4)।

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हमारे बीच में जो भी सांस्कृति, सामाजिक, जातीयता और राजनीतिक भिन्नताएँ हों, यीशु में हमारा एक समान विश्वास क्यों ऐसे सभी विभाजनों से ऊपर होना चाहिए?

सोमवार **नवम्बर 26**

मेल-मिलाप की सेवकाई

हमारा संसार निश्चित रूप से गड़बड़ी, समस्याओं, लड़ाईयों और संघर्षों के लिये जाना जाता है। ये सभी कारक हमारे जीवन को व्यक्तिगत,

सामुदायिक, और राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावित करते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है हमारा संपूर्ण जीवन संघर्ष में है। परन्तु अनेकता और गड़बड़ी हमेशा के लिये हावी नहीं होगा। परमेश्वर ब्रह्मांडीय एकता लाने पर कार्य कर रहा है। पाप ने सामंजस्य को बिगाड़ दिया है, परन्तु परमेश्वर की, मेल-मिलाप के लिये, अनंत योजना खुशी और एकता लाती है।

इफि० 2: 13-16 में, पौलुस सिद्धान्तों को आगे रखता है जो दिखलाता है किस प्रकार मसीह ने विश्वासियों के बीच खुशी लाने के लिये कार्य किया: क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा मसीह ने यहूदी और अन्यजाति दोनों को एक किया और उन्हें अलग करने वाली जातीय और धार्मिक प्रतिबंध को खत्म किया। यदि मसीह प्रथम सदी में यहूदी और अन्यजातियों के साथ यह कर सकता था, तो कितना अधिक वह अभी भी किसी जातियत और सांस्कृतिक प्रतिबंधों और दीवारों को ढाह सकता है जो आज हमारी कलीसिया के अंदर लोगों को विभाजित करती है?

इस शुरुआती बिन्दु से हम संसार तक पहुँच बना सकते हैं।

2कुरि० 5: 17-21 में पौलुस कहता है कि हम मसीह में नई सृष्टि हैं और मसीह के साथ हमारा मिलाप हो गया है। तब इस संसार में हमारी सेवकाई क्या है? एक एकीकृत कलीसिया के अंग के तौर पर हमारे समुदायों में हम कौन-सी भिन्नताएँ ला सकते हैं?

_____

_____

_____

परमेश्वर की नई सृष्टि के तौर पर, विश्वासीगण एक महत्त्वपूर्ण सेवकाई को प्राप्त करते हैं- मेल-मिलाप की तिगुनी सेवकाई। (1) हमारी कलीसिया विश्वासियों द्वारा गठित है जो एक बार परमेश्वर से अलग-थलग थे पर मसीह के बलिदान के बचाने वाले अनुग्रह से पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर में एक हो गये हैं। हम शेष कलीसिया हैं, जिन्हें संसार में अंतिम समय के संवाद को प्रचार करने के लिये बुलाया गया है। हमारी सेवकाई उन्हें आमंत्रित करना है जो अभी भी परमेश्वर से अलग पड़े हैं और परमेश्वर से मेल-मिलाप कराना है तथा हमारे काम में शामिल करना है। (2) कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं जिन्होंने एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप कर लिया है। मसीह के साथ एक होने का अर्थ है हम एक दूसरे के साथ एक हैं। यह केवल दिखावटी विचार नहीं होना चाहिए; इसे साक्षात वास्तविकता होना चाहिए। एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप, भाईयों एवं बहनों में शांति और सामंजस्य संसार के लिये अचूक गवाही है कि यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्ता और छुड़ाने वाला है। "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13: 35)। (3) मेल-मिलाप की इस सेवकाई के

द्वारा, कलीसिया संसार को बतलाती है कि परमेश्वर के छुटकारे की योजना सत्य और शक्तिशाली है। महान संघर्ष परमेश्वर और उसके चरित्र के विषय में है। यद्यपि कलीसिया एकता और मेल-मिलाप को विकसित करती है, संपूर्ण जगत परमेश्वर के अनंत ज्ञान से निकले काम को देखता है। (देखें इफि० 3: 8-11)।

मंगलवार **नवम्बर 27**

व्यावहारिक एकता

एलेन जी० ह्वाईट ने सन् 1902 में लिखा: "मसीह ने इस पृथ्वी पर अपने जीवन में जैसा रहा, वैसा हरेक मसीही को होना है। वह अपने-दाग रहित शुद्धता ही में नहीं, वरन अपने धैर्य दयालुता, और स्वभाव के आकर्षण में हमारा उदाहरण है।"- Ellen G . White, in Signs of the Times, July 16, 1902. ये वचन फिलिपियों को पौलुस की अपील की याद दिलाते हैं: "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो" (फिलि० 2: 5)।

पढ़ें इफि० 4: 25; 5: 2 एवं कुलु० 3: 1-17, और तब इन दो प्रश्नों के उत्तर दें: हमारे जीवन के किन क्षेत्रों में विशेष रूप से यीशु के प्रति वफादारी होने को हम बुलाये गये हैं? हमारे आम जीवन में यीशु की गवाही हम कैसे हो सकते हैं ?

_____

_____

पवित्रशास्त्र में बहुत से अवतरण हैं, जो मसीहियों को यीशु का उदाहरण बनने और दूसरों के लिये परमेश्वर के अनुग्रह की जीवित गवाही होने को आमंत्रित करता है। हमें भी दूसरों की भलाई हेतु आमंत्रित किया गया है (मत्ती 7: 12); एक दूसरे के बोझ उठाने के लिये (गला० 6: 2); एक सादा जीवन जीने के लिये और आंतरिक आत्मिकता पर जोर देने के लिये न कि बाहरी दिखावा के लिये (मत्ती 16: 24-26; 1पत० 3: 3-4); और स्वास्थ्य पूर्ण जीवन जीने के लिये (1कुरि० 10: 31)।

"हे प्रियो मैं तुम से विनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। अन्य-जातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; इसलिये कि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें (1पत० 2: 11-12)। हम बहुधा कितनी बार उन लोगों पर मसीही चरित्र के प्रभाव को कमत्तर आंकते हैं जो हमें देखते हैं? परेशानी के समय में व्यक्त

धैर्य, तनाव और संघर्षों के बीच में एक अनुशासित जीवन, व्यग्रता और कठोर शब्दों के जवाब में एक नम्र आत्मा, यीशु की आत्मा के चिह्न हैं जिन्हें अनुसरण करने हेतु हम बुलाये गये हैं। जिस प्रकार सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट, संसार में एक साथ गवाही देते हैं, जो परमेश्वर के चरित्र को गलत समझ लेते हैं, हम अच्छाई के लिये और परमेश्वर की महिमा के लिये एक शक्ति बन जाते हैं। मसीह के प्रतिनिधि के तौर पर विश्वासीगण केवल अपने नैतिक सादगी के लिये ही नहीं जाने चाहिये वरन दूसरों की भलाई में उनकी व्यावहारिक रुचि के लिये भी जाने चाहिये। यदि हमारा धार्मिक अनुभव सच्चा है, यह स्वयं प्रकट होगा और संसार में इसका प्रभाव होगा। विश्वासियों का एक संगठित निकाय जो संसार में मसीह के चरित्र को प्रकट करता है वाकई में एक सशक्त गवाही होगा।

दूसरों को आप किस प्रकार की गवाही देते हैं? आपके जीवन में कोई क्या देख सकता है जो उसे यीशु का पीछा करने में मदद करे?

बुधवार **नवम्बर 28**

अनेकता में एकता

रोमियों 14 और 15 में प्रेरित पौलुस विवादों को संबोधित करता है जो गहराई से रोम में कलीसियाओं को विभाजित कर रहे थे। इन विवादों पर उसका जवाब था, रोमियों को एक दूसरे के प्रति सहनशील और धैर्यवान बनना और इन विषयों के कारण कलीसिया को विभाजित नहीं करना था। इस सलाह से हम क्या सीख सकते हैं?

पढ़ें रोम 14: 1-6. अंत:करण के कौन-से विवाद रोम में कलीसिया के सदस्यों में एक दूसरे के साथ सहभागिता को नहीं, पर न्याय को उकसा रहा था ?

यह बिलकुल उपयुक्त है कि इस विषय वस्तु को यहूदी विधि-अशुद्धता के साथ कुछ करना था। पौलुस के अनुसार ये "संदेहास्पद चीजों पर विवाद" था (रोमि० 14: 1), यह संकेत करता है कि वे उद्धार से संबंधित विषय-वस्तु नहीं थे परन्तु विचारों का विषय था, जिसे व्यक्तिगत अंत:करण में छोड़ देना चाहिए था (देखें रोम० 14: 5)।

ये विवाद पहली बार खाये गये भोजन के किस्म पर था। लैव्यव्यवस्था 11 में जानवरों के मांस खाने में मनाही के विषय में समस्या नहीं थी जिसे पौलुस ने यहाँ पर संबोधित किया। कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि प्रारंभिक मसीहियों ने सुअर का मांस या अन्य अशुद्ध जानवर का मांस पौलुस के समय में खाना शुरू किया, और हम जानते हैं पतरस ने ऐसा भोजन नहीं खाया (देखें प्रेरि० 10: 14)। निर्बल केवल साग-पात खाने लगे (रोम० 14: 2), विवादित

पेय पदार्थ को भी शामिल किया (रोम० 14:17,21), यह संकेत करता है कि ध्यान विधि अशुद्धता पर भी दिया जाता है। यह अशुद्ध शब्द के द्वारा भी प्रमाणित है जो रोम० 14:14 में व्यवहार किया गया है। वह शब्द पुराने नियम के प्राचीन यूनानी अनुवाद में भी प्रयुक्त है यह अशुद्ध जानवरों को संकेत करता है लैव्यव्यवस्था 11 के गंदे जानवरों को नहीं। जाहिर-सी बात है कि रोमी समुदाय में कुछ लोग थे जो सहभागिता का भोजन नहीं करते थे क्योंकि उन्हें यकीन नहीं था कि भोजन उचित रीति से तैयार किया गया था या मूर्तियों के सामने परोसा (चढ़ाया) नहीं गया था।

कुछ दिनों तक यही रीति चलने लगती है। यह सप्ताहिक सब्त को संकेत नहीं करता था, क्योंकि हम जानते हैं पौलुस लगातार इसे मानता था (प्रेरित० 13:14, 16:13, 17:2)। यह यहूदियों का विभिन्न त्योहार या उपवास के दिन को संकेत करता था। पौलुस का इरादा इन पदस्थलों में यह है कि इन रीति-रिवाजों के पालन में जो विश्वस्त और विवेकशील हैं उनके प्रति सहनशील होना है जब तक कि वे नहीं जानते कि वे उद्धार के साधन हैं। मसीहियों में एकता धैर्य एवं सहनशीलता में प्रकट होती है जब हम हमेशा किसी बिन्दु पर राजी नहीं होते हैं, खासकर उस समय जब ये हमारे विश्वास के लिये आवश्यक नहीं होते हैं।

कक्षा में इस प्रश्न को पूछें: क्या कुछ है जिसे हम सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के तौर पर विश्वास करते और अभ्यास करते हैं जिसे ऐडवेंटिस्ट कहलाने वाले सभों को विश्वास करने और इसमें दृढ़ रहने की जरूरत नहीं है?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 29**

विशेष कार्य में एकता

लूका 22:24 में प्रभु की बिमारी के दौरान चेलों के मन में एक विवाद हुआ जो पेंतिकोस्ट के अनुभव से कुछ पूर्व (प्रेरि० 1:14 एवं 2: 1, 46) था। उनके जीवन में ऐसी भिन्नता किस कारण से आई ?

_____

_____

प्रेरि० 1:14 एवं 2:46 में वाक्यांश "एक मन होकर" का अर्थ "एक मन के साथ निरंतर" भी होता है। यह उनके एक साथ एक जगह रहने के परिणाम स्वरूप हुआ, वे प्रार्थना में उनके लिये सहायक भेजने के यीशु की प्रतिज्ञा के पूरे होने की आस लगाये हुए थे।

जैसे वे उम्मीद लगाये हुए थे, यह उनके लिये सहज रहा होगा कि वे एक दूसरे की शिकायत करने लगे। कुछ ने पतरस द्वारा यीशु को इंकार करने पर प्रश्न उठाया होगा (यूहन्ना 18: 15-18, 25-27) और कुछ ने यीशु के पुनरुत्थान पर थोमस के संदेह को उजागर किया (यूहन्ना 20:25)। उन्होंने यीशु के राज्य में अति शक्तिशाली पद पाने के यूहन्ना और याकूब के आग्रह

को याद किया होगा (मार्क 10: 35-41) या कि मत्ती पहले तुच्छ महसूल लेने वाला था (मत्ती 9: 9)।

फिर भी "तैयारी के ये दिन गहराई से हृदय को टटोलने के दिन थे। चेले अपनी आत्मिक जरूरत को महसूस करने लगे थे और पवित्र मरहम के लिये परमेश्वर से रोकर पुकारने लगे थे जो उन्हें लोगों को बचाने के काम में लायक बनाने के लिये था। उन्होंने स्वयं के लिये आशिष नहीं मांगी। वे लोगों के उद्धार के भार से दबे थे। उन्होंने महसूस किया कि सुसमाचार को संसार तक ले जाना था, और वे मसीह द्वारा प्रतिज्ञा की गई सामर्थ्य का दावा कर रहे थे।" Ellen G. White, The Acts of the Apostles, P37.

चेलों और उनकी प्रार्थनाओं की गहनता के बीच सहभागिता ने पेंतिकोस्ट के इस प्रभावशाली अनुभव के लिये उन्हें तैयार किया। जिस प्रकार वे परमेश्वर की ओर नजदीक खींचे जा रहे थे। और अपनी व्यक्तिगत विभिन्नताओं को अलग कर रहे थे। चेले यीशु के पुनरुत्थान के पवित्र आत्मा द्वारा निडर गवाह बनने के लिये तैयार हो रहे थे। वे जानते थे कि यीशु ने उनके बहुत से पापों को क्षमा कर दिया था, और इसने उन्हें आगे बढ़ने के लिये हिम्मत प्रदान की। वे जानते थे कि यीशु ने उनके जीवन में क्या किया था। वे उसमें मिलने वाले उद्धार को जानते थे, और इस प्रकार " विश्वासियों की आकांक्षा मसीह के चरित्र की समानता को प्रकट करना था और उसके राज्य की बढ़ोतरी के लिये परिश्रम करना था।"– पेज 48. बेशक परमेश्वर उनके द्वारा सामर्थ्यपूर्ण चीजों को होने देने में सक्षम था। आज हमारी कलीसिया के लिये क्या सीख है।

यह हमेशा दूसरे लोगों के जीवन में गलतियाँ ढूंढ़ना सहज रहा है। दूसरों की गलतियों को अलग करना (दूर करना) हम कैसे सीख सकते हैं, ताकि एकीकृत कलीसिया में परमेश्वर की इच्छानुसार बड़ा कार्य कर सकें ?

शुक्रवार **नवम्बर 30**

अतिरिक्त अध्ययनः Ellen G. White, "Unity in Diversity", PP. 98-103, in Evangelism.

अग्रलिखित उद्धरण यह व्यक्त करने में मदद करता है कि प्रारंभिक कलीसिया, मसीह में होकर, उनके बीच भिन्नता होने के बावजूद एकता को कायम रखने में कामयाब रही, और इस प्रकार संसार के लिये सशक्त गवाह बनी। "कलीसिया के भीतर, पवित्रशास्त्र वर्णन करता है कि किस प्रकार पवित्र आत्मा ने कलीसिया में इसके निर्णय लेने की प्रक्रिया में अगुवाई की। यह तीन नजदीकी संबद्ध तरीकों से हुआ है: प्रकाशन (आत्मा ने लोगों से कहा क्या किया जाये; कुरनेलियुस, हनन्याह, फिलिप; और संभवतः लॉटरी का डाला जाना), पवित्र शास्त्र (कलीसिया एक निष्कर्ष पर पहुँची, जिस पर पवित्रशास्त्र

का इस्तेमाल हुआ), और आम सहमति (आत्मा ने समुदाय के अंदर से काम किया और बातचीत एवं अध्ययन के द्वारा आम सहमति कायम की जिसके अन्त में कलीसिया ने महसूस किया कि आत्मा इनके भीतर कार्य कर रहा था)। यह प्रकट होता है कि जब सांस्कृतिक, सैद्धान्तिक, और धर्मविज्ञान संबंधी विवाद जो विश्वासियों के समुदाय के बीच में है, पवित्र आत्मा ने इसके निर्णय लेने की प्रक्रिया में आम सहमति के द्वारा कार्य किया। इस प्रक्रिया में हम विश्वासियों के समुदाय की सक्रिय भूमिका को देखते हैं न कि इसके अगुवों और विचार हेतु प्रार्थना की महत्ता को। पवित्र आत्मा की अगुवाई परमेश्वर के वचन को समुदाय द्वारा समझे जाने के दौरान महसूस की जाती है, समुदाय का अनुभव और इसकी जरूरतें, और इसके अगुवों के अनुभव द्वारा जिस प्रकार वे सेवकाई करते हैं। पवित्र आत्मा की अगुवाई से कलीसिया में बहुत से निर्णय लिये गये, जिसमें पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, और अनुभव धार्मिक प्रतिबिम्ब के मूल तत्व रहे।"- Denis Fortin, "The Holy spirit and the church," inAngel Manuel Rodrignez, ed, Message, Mission, and Unity of the Church, PP. 321,322.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. कक्षा में अपने जवाबों के लिये बुधवार के प्रश्न पर जायें कि किस प्रकार हम निर्णय लेते हैं? कौन-सी शिक्षाएँ और अभ्यास सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट के तौर पर हमारे लिये आवश्यक हैं और कौन-सी नहीं।
2. मसीहियों को दूसरे मज़हबों के साथ हम कैसे संबद्ध करें जो हमारे समान यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करते हैं?

सारांशः- भाइयों और बहनों के लिये एकता का अति विश्वसनीय प्रमाण है यीशु के समान एक दूसरे से प्रेम करना। हमारे पापों की क्षमा और उद्धार जिसे सामान्य तौर पर हम ऐडवेंटिस्ट साझा करते हैं हमारी सहभागिता का बेहतरीन बंधन है। मसीह में हम इस प्रकार हमारे सामान्य विश्वास की गवाही और हमारी एकता दुनिया को दिखा सकते हैं। हम कुछ भी कमत्तर करने के लिये बुलाये नहीं गये हैं।